वाला मारा पोष महिनो रे आव्यो, हांरे अम दुखणियो ने दुख पूरा लाव्यो।
वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो, हांरे मारूं चीरी अंग मीठडे भराव्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! पूस (पौष) का महीना आया है। हम दुखियों के लिए और दुःख लाया है। इस वैरी ने हमारे ऊपर इस बुरी तरह से झपट लगाई है मानो हमारे अंगों को फाड़कर नमक भर दिया है। हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला टाढी अगिननों वावलियो वाय, नीला टली सूकीने भाखरियो थाय।
पान फूल फल सर्वे झरी जाय, वाला अमे ए रुत केमे न खमाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह ठण्डी हवाएं अग्नि के समान लगती हैं। हरियाली सूखकर सूखी रोटी (पापड़) की तरह हो गयी है। वृक्षों से पत्ते, फूल और फल सब झड़ (गिर) गए हैं। यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा आव्यो रे महिनो माह, जंगलियो वाले रे वनस्पति दाहे।
दाहनां दाधां रूखडियो केवा चरमाय, स्याम विना सुंदरियो एम सोहाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

वालाजी! माघ का महीना आया है। इसने जंगल और वनस्पति को अपनी ठण्ड से जला दिया है। आग की तरह ठण्ड से जले हुए वृक्ष जैसे सूख गए हैं। वैसे ही, हे पिया! आपकी विरहणियों की हालत हो गई है और वह पिया-पिया करके पुकारती हैं।

रे वाला मारे मंदिरिए आवी ने आरोग, हांरे अम विरहणियो ना टालो रे विजोग।
हां रे सुन्दर सेजडीनो आवी लेओ भोग, एता सकल तमारो संजोग।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे वालाजी! मेरे घर में आकर भोजन करो और हम विरहणियों का वियोग हटाओ। आकर सुन्दर सेज का आनन्द लो। यह सब आपके मिलने पर ही सम्भव है। इसलिए, हे प्रीतम! मैं आपको पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १८ ॥

॥ वसंत रुत (फागुन-चैत्र) ॥

राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी वसंत, चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत।
वाला वनडू मोरयूं रे कूपलियो वरंत, एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे धनी! बसन्त ऋतु आई है और चन्द्रमा से अमृत की बूंदें बरस रही हैं। हे वालाजी! वन में नई-नई कोंपल निकल रही हैं। इस समय यदि आप नहीं आओगे तो मेरा अन्त हो जाएगा (मैं मर जाऊंगी)। इसलिए हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

एणे समे अबीर गुलाल उछलियां, चोवा चंदन केसर कचोले भरिया।
नाहो नारी रमे रे फागणिऐ मलिया, एणे समे अमें तो घणूं कलकलिया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

इस समय हर कोई अबीर और गुलाल उड़ाते हैं। अरगजा (चोआ), चन्दन, केसर के कटोरे भर-भर के पति पत्नी फागुन के महीने में आनन्द से खेलते हैं। ऐसे समय में मैं बिलख-बिलखकर रोती हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वाला वन फागणियो रे उछाले, पंखीडा करे रे कलोल बेठा माले।
हांरे अम विरहणियो ना चितडा चाले, आंगणडे ऊभियो पंथडो निहाले।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! फागुन मास में फल-फूल और नए पत्ते आने से वन अच्छे लगते हैं। पक्षी आनन्द से अपने घोंसले में बैठकर किलोल करते हैं। हम दुखियों के चित्त न जाने कहां चले गए हैं कि आंगन में खड़े होकर आपके आने की राह देख रहे हैं और मैं पिया-पिया पुकार रही हूं।

वाला वनडु कोल्यूं कामनी पामी करार, पसु पंखी हरख्या पाडे रे पुकार।
वाला विरह भाजो रे विरहणियो ना आवार, एणे समे न आवो केम प्राणनाआधार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! वन में नई-नई कोंपले देखकर हम कामिनियों को बड़ा आनन्द मिलता है। पशु-पक्षी बड़ी खुशी में मधुर शोर करते हैं। हे वालाजी! इस बार हम विरहिणियों का विरह मिटाओ। ऐसे समय में आप मेरे प्राणाधार क्यों नहीं आते हो? मैं तो पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

वाला मारा चैतरिए एणे मास, पिउजी सो करता विनोद घणा हांस।
वन मांहें विविध पेरे रे विलास, ते अमे अहनिस नाखूं छूं निस्वास।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे मेरे वालाजी! चैत (चैत्र) के इस महीने में मैं अपने प्रीतम से हंसी विनोद का सुख लेती थी। वन के बीच में तरह-तरह के आनन्द लेती थी। वही अब मैं दिन-रात आहें भरती हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वाला मूने ए दिन केम करी जाय, पिउजी विना खिण वरसां सो थाए।
वाला मूने विलखंतां रैणी विहाय, पिउजी विना ए दुख केने न केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे धनी! यह दिन मैं कैसे बिताऊं? पिया के बिना एक पल सौ वर्ष के समान बीत रहा है। मेरी रोते-रोते रात बीतती है। ऐसे दुःख को पिया के बिना कह नहीं सकती। केवल पिया-पिया कहके पुकार रही हूं।